HINDI KAVITA : BODH (AAYA NAHI) GAYA: 23 July 2020

Kaun hu mai ?
Hu kahan se aaya ?

Prani hu, itna to janta hu
Par pran kahan se paya ?

Jiv-atma hu, sayane batate hain
Par atma kya hai, se koi nahi bata paya

Arso se in sadharan prashon ke uttar dhoond raha hu
Saath saal ka ho gaya hu, abhi tak nahi boojh paya

Raahi hu, apni rah par chal raha hu
Jaana kahan hai ? Kidhar se hu main aaya ?

Jeevan kya hai, gyaniyon ne bade vistar se samjhaya
Jeena kaise hai, ye koi nahin samjha paya

Maut kya hai is ka bhi ilm hai mujhe
Maut ke aage kya hain, je kissi ne nahi darshaya

Vidya, vivek, anubhav, sabhi ko hai maine bharpoor aajmaya
Shastr, ved, granthon me bhi hai apne aap ko khoob dubaya

Dhyan, Adyannan, Chintan, Mannan ko bhi maine apnaya
Paruntu en sadharan prashon ke rahaysa phir bhi na jaan paya

Samasth prayatanon ke paschat aakhir Adhyatam hi mere kaam aaya
Shoonya hone ka ahsaas jab mujh me jagaya

Chanchal man, buddhi, chit ko jab zara shant kar paya
To hi apne aap ko apne aap se alag kar paya

Antatah gyan ka ye durlab moti anant ki gehrahiyon se bator paya
Bodh Gaya to hi Aanand Paya.

Conceived & Written By:
Amardeep Bhardwaj
23 July 2020

gr8ideas.com
Copyright@gr8-ideas.com

बोध (आया नहीं) गया

कौन हूँ मैं ?
हूँ कहाँ से आया ?

प्राणी हूँ, इतना तो जनता हूँ
पर प्राण कहाँ से पाया ?

जिव-आत्मा हूँ, सयाने बताते हैं
पर आत्मा क्या है, यह कोई नहीं बता पाया

अर्सों से इन साधारण प्रश्नों के उत्तर ढूंढ रहा हूँ
साठः साल का हो गया हूँ, अभी तक नहीं बूझ पाया

राही हूँ, अपनी राह पर चल रहा हूँ
जाना कहाँ है ? किधर से हूँ मैं आया ?

जीवन क्या है,ज्ञानियों ने बड़े विस्तार से है समझाया
जीना कैसे है, यह कोई नहीं समझा पाया

मौत क्या है इस का भी इल्म है मुझे
मौत के आगे क्या है,यह किसी ने नहीं दर्शाया

विद्या, विवेक, अनुभव, सभी को है मैंने आजमाया
शास्त्र, वेद, ग्रंथों में भी है अपने आप को खूब डुबाया

ध्यान, अध्यन्नं, चिंतन, मन्नान को भी मैंने अपनाया
परन्तु इन साधारण प्रश्नों के रहस्य को फिर भी न जान पाया

समस्त प्रयत्नों के पश्चात आखिर अध्यात्म ही मेरे काम आया
शून्य होने का अहसास जब मुझ में जगाया

gr8-ideas.com
Copyright©gr8-ideas.com

जब मन, बुद्धि, चित को ज़रा शांत कर पाया
तो ही अपने आप को अपने आप से अलग कर पाया

अंततः ज्ञान का यह दुर्लभ मोती अनंत से बटोर पाया
बोध गया तो ही आनंद पाया.

(अमरदीप भरद्वाज)
मेजर जनरल (रिटायर्ड)
२३ जुलाई २०२०

gr8-ideas.com
Copyright©gr8-ideas.com

बोध (आया नहीं) गया

कौन हूँ मैं ?
हूँ कहाँ से आया ?

प्राणी हूँ, इतना तो जनता हूँ
पर प्राण कहाँ से पाया ?

जिव-आत्मा हूँ, सयाने बताते हैं
पर आत्मा क्या है, यह कोई नहीं बता पाया

अर्सों से इन साधारण प्रश्नों के उत्तर ढूंढ रहा हूँ
साठः साल का हो गया हूँ, अभी तक नहीं बूझ पाया

राही हूँ, अपनी राह पर चल रहा हूँ
जाना कहाँ है ? किधर से हूँ मैं आया ?

जीवन क्या है,ज्ञानियों ने बड़े विस्तार से है समझाया
जीना कैसे है, यह कोई नहीं समझा पाया

मौत क्या है इस का भी इल्म है मुझे
मौत के आगे क्या है,यह किसी ने नहीं दर्शाया

विद्या, विवेक, अनुभव, सभी को है मैंने आजमाया
शास्त्र, वेद, ग्रंथों में भी है अपने आप को खूब डुबाया

ध्यान, अध्यन्नं, चिंतन, मन्नान को भी मैंने अपनाया
परन्तु इन साधारण प्रश्नों के रहस्य को फिर भी न जान पाया

समस्त प्रयत्नों के पश्चात आखिर अध्यात्म ही मेरे काम आया
शून्य होने का अहसास जब मुझ में जगाया

जब मन, बुद्धि, चित को ज़रा शांत कर पाया
तो ही अपने आप को अपने आप से अलग कर पाया

अंततः ज्ञान का यह दुर्लभ मोती अनंत से बटोर पाया
बोध गया तो ही आनंद पाया.

gr8-ideas.com
Copyright©gr8-ideas.com

(अमरदीप भरद्वाज)
मेजर जनरल (रिटायर्ड)
२३ जुलाई २०२०

gr8-ideas.com
Copyright©gr8-ideas.com